# मोरंगे

नवम्बर–दिसम्बर, 2025

# अनुक्रम


**गीत कविताएँ**

लाल बेर

एक कुत्ता

कमल

मेरा घर

पीले आम

मोटी रोटी

**कहानियाँ**

मेहनत का फल

हिरण की सलाह

नीलम का सपना

**याद की धूप छाँव में**

बारिश का संकट

सपनों की उड़ान

**बात लै चीत लै**

चतुर किसान

अमरूद और टमाटर की गपशप

**चित्र–आस्था वर्मा,** कक्षा–5, शेरपुर


**सम्पादन :** राजेश कुमावत
**डिज़ाइन :** लोकेश राठौर
**वितरण** : अंकुश शर्मा
**आवरण चित्र :** क्षमा सोनवाल, कक्षा–9, उमंग सेंटर कुण्डेरा
**वर्ष 16 अंक 185–186**

**प्रबंधन**
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

**पत्रिका का पता**
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,
मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान
322001

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

# गीत कविताएँ

## लाल बेर

लाल लाल हैं बेर कितने
हमको लगते मीठे इतने
मैं भी तुमको क्या बताऊँ
जहाँ देखो वहाँ मिलते कितने।

**अमन बैरवा,** कक्षा–5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर हिम्मतपुरा

## एक कुत्ता

एक कुत्ता सो रहा
सोते सोते रो रहा
कुत्ता गम में खो रहा
बेचारा अकेले–अकेले रो रहा
पैर में कांटा सा चुभ रहा
मैंने देखा गौर से
पास आया बिना शोर के
प्यार से सहलाया उसको
तब अपना माना उसने मुझको
धीरे से निकाला कांटा
फिर उसने अपना दुःख बांटा मुझसे

**मनीष बैरवा**, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

**चित्र–नमन माली,** कक्षा–7, उदय पाठशाला कटार

## कमल

मैं गई फरिया, वहाँ था दरिया

दरिया में था पानी, पानी में था कमल

कमल की पंखुड़ियाँ थी नरम नरम

उस पर बैठ गया भंवरा करन

करन था नटखट, तोड़ दिया कमल

कमल को देखकर रोया चरण

पिंकी को रोना अच्छा नहीं लगा

दूसरा लगा दिया कमल।

**ममता जागा**, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

## मेरा घर

सबसे प्यार मेरा घर

सबसे न्यारा मेर घर

घूप, ठंड और बरसात

से मुझे बचाता मेरा घर

नाना–नानी के घर से भी

मुझको प्यारा मेरा घर।

**दिलबर मीना,** कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

**चित्र–विजेन्द्र गुर्जर,** कक्षा–5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बोदल

## पीले आम

ऊँचा–ऊँचा पेड़ है कितना

उसमें आते आम हजार

पीले–पीले आम हैं आते

हम भी खाते आम हजार।

**अमन बैरवा,** कक्षा–5, उदय किरण सेंटर हिम्मतपुरा।

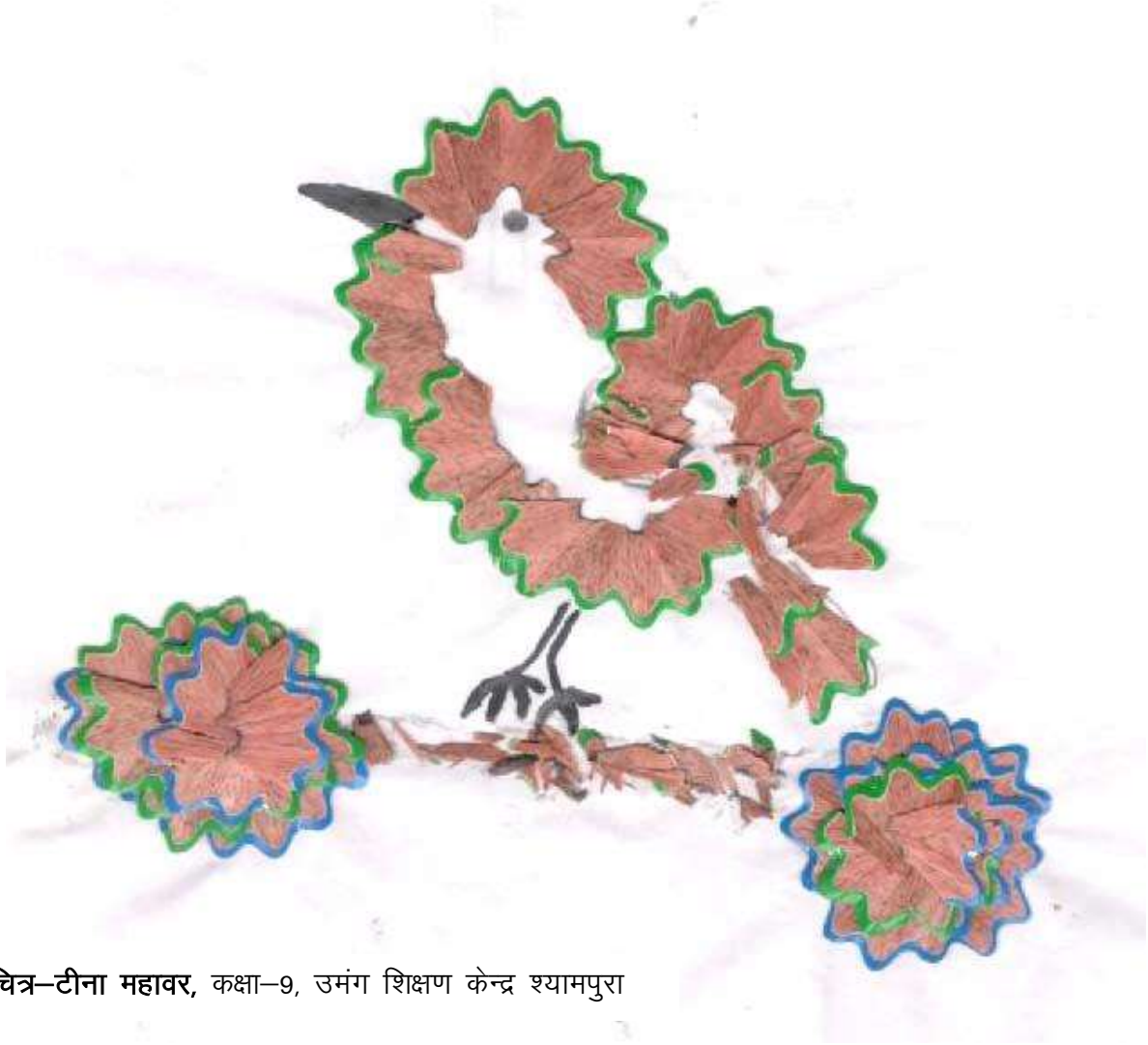

**चित्र–टीना महावर,** कक्षा–9, उमंग शिक्षण केन्द्र श्यामपुरा

## मोटी रोटी

गोल, गोल रोटी
पापा ने बनाई मोटी–मोटी
कुछ कुछ काली पर
घी में भर डाली
जो भी खाये दंग रह जाये
झट से पेट भर जाये
खाने वाले को बड़ा मजा आये
जी भर के खाता ही रह जाये
इसको जिसने भी खाई
उसने की बढ़ाई।

**मीनाक्षी बैरवा,** कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

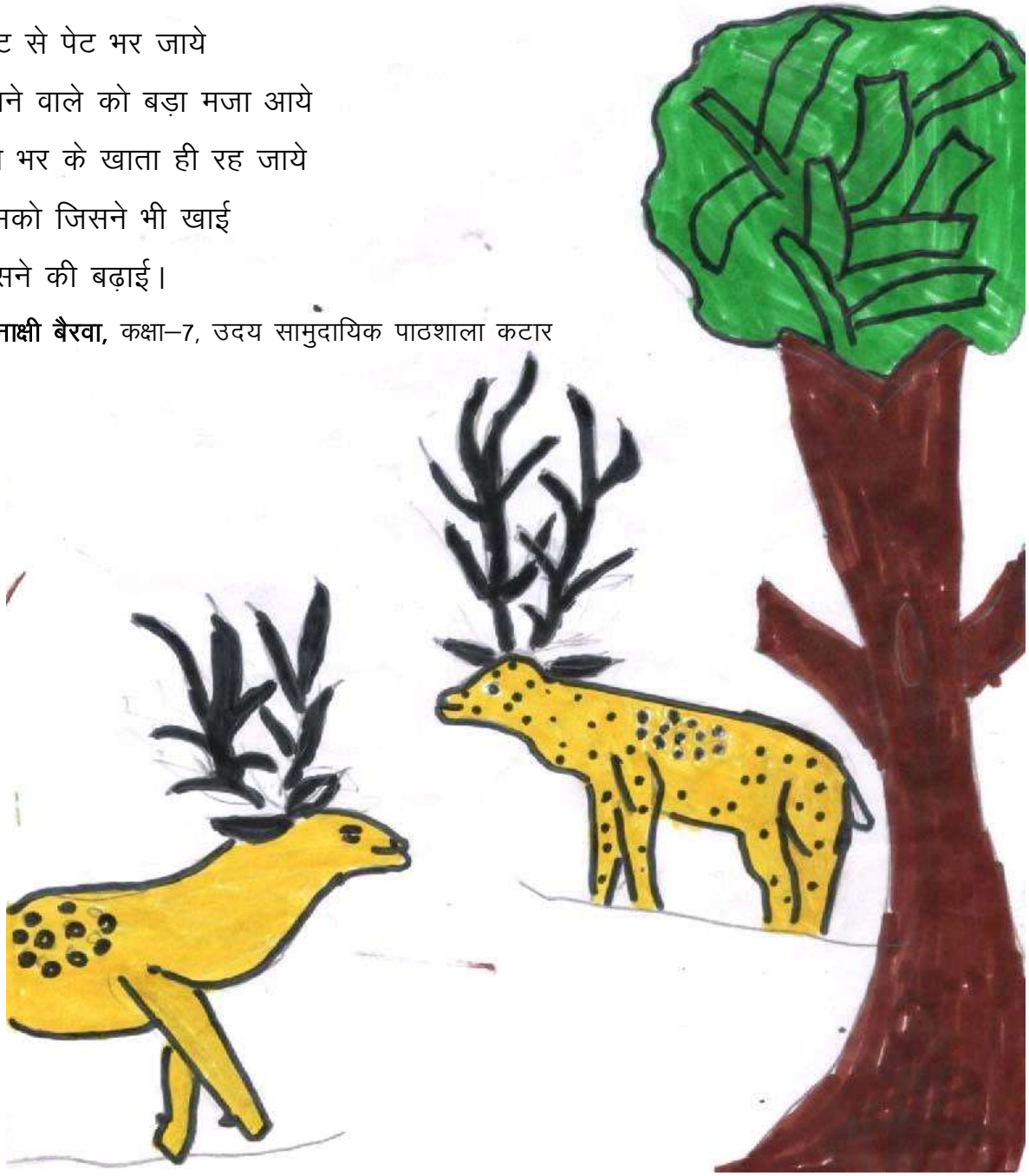

**चित्र–विष्णु नायक,** फैलो, फोरम थियेटर टीम

# कहानियाँ

## मेहनत का फल

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके दो पुत्र थे। एक पुत्र बहुत आलसी था और दूसरा बहुत मेहनती था। मेहनती पुत्र रोज मेहनत करता, खेत में काम करता और धन कमाकर घर का गुजारा चलाता था। दूसरी ओर आलसी पुत्र दिन भर सोता रहता और कोई काम नहीं करता था। कुछ समय बाद किसान बूढ़ा हो गया। वह दोनों बेटों की आदतों से परेशान हो गया। उसने सोचा कि अब दोनों को अपने–अपने जीवन की जिम्मेदारी खुद उठानी चाहिए। इसलिए उसने दोनों बेटों का बंटवारा कर दिया और उन्हें अलग–अलग रहने को कहा। मेहनती पुत्र मेहनत करके अपने परिवार का अच्छे से पालन पोषण करने लगा। उसके घर में कभी किसी चीज की कमी नहीं हुई। धीरे–धीरे उसकी हालत अच्छी हो गई। लेकिन आलसी पुत्र काम न करने के कारण गरीब होता चला गया। उसके पास खाने तक के पैसे नहीं रहते थे। एक दिन वह बहुत परेशान होकर अपने मेहतनी भाई के पास गया और अपनी गलती मान ली। उसने कहा, भाई अब मुझे समझ में आ गया है कि बिना मेहनत के कुछ भी नहीं मिलता। मेहनती भाई ने उसे समझाया और काम करने की सलाह दी। आलसी भाई ने मेहनत करने का निश्चय किया। उसने काम करना शुरू किया और धीरे–धीरे उसकी हालत भी सुधरने लगी।

**चेतराम गुर्जर,** कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

**चित्र–सूरज बैरवा,** कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

## हिरण की सलाह

एक गांव में दो दोस्त रहते थे। एक खरगोश और दूसरा शेर। एक दिन खरगोश ने शेर से कहा, मेरा गाजर खाने का मन कर रहा है, क्यों न हम माली की बाड़ी में गाजर खाने चलें। शेर बोला, मुझे तो मांस खाना हैं, क्यों न हम शिकार करने चलें। इस बात पर दोनों में झगड़ा हो गया। वे एक–दूसरे की बात मानने को तैयार नहीं थे। उनका झगड़ा देखकर पास में रहने वाला हिरन उनके पास आया। हिरन ने कहा, तुम दोनों दोस्त हो, झगड़ा करना ठीक नहीं है। ऐसा करो, आज खरगोश की बात माल लो और गाजर खा लो। कल शेर की बात मान लेना और शिकार कर लेना। इससे तुम दोनों खुश रहोगे। खरगोश और शेर को हिरन की बात समझ में आ गई। दोनों ने झगड़ा बंद कर दिया और दोस्ती से रहने लगे।

**सपना बैरवा,** कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

**चित्र–अल्फिजा बानो,** उदय किरण शिक्षण केन्द्र कानसीर

## नीलम का सपना

नीलम 10 साल की एक छोटी बच्ची थी। जो गरीबी के कारण अपने घर में अकेली रहती थी। उसके माता–पिता शहर काम करने गए थे और नीलम रात भर प्लास्टिक की पन्नियाँ चुनकर अपना गुजारा करती थी। कभी उसे खाना मिलता तो कभी उसे भूखे पेट ही सोना पड़ता। भूख और अकेलेपन के बीच उसकी आँखों में आंसू तो होते थे लेकिन एक चीज ऐसी थी जो उसे टूटने नहीं देती थी वह थी उसका पढ़ाई के प्रति लगाव। नीलम का पढ़ाई में बहुत ध्यान था। जब भी वह कचरे के ढेर में पन्नियाँ ढूंढती तो उसकी नजर पुरानी फटी हुई किताबों या अखबार के टुकड़ों पर टिक जाती। वह उन्हें बड़े प्यार से साफ करती और जब भी उसे समय मिलता, उन्हें पढ़ने की कोशिश करती। एक दिन पन्नियाँ बेचते समय उसे सड़क किनारे एक फटी हुई स्कूल की डायरी मिली। वह उसे पढ़ रही थी तभी वहाँ से गुजर रहे एक स्कूल के मास्टर जी की नजर उस पर पड़ी। उन्होंने देखा कि एक छोटी सी बच्ची जिसके हाथ गंदे हैं लेकिन आँखों में पढ़ने की एक अनोखी चमक है। मास्टर जी ने नीलम से बात की और उसकी हिम्मत बढ़ाई। उन्होंने नीलम का दाखिला पास के एक सरकारी स्कूल में करा दिया, जहाँ उसे दोपहर में खाना भी मिलने लगा। अब नीलम को रात भर पन्नियाँ नहीं चुननी पड़ती थी। वह मन लगाकर पढ़ने लगी। कुछ सालों बाद नीलम की मेहनत रंग लाई। उसने अपनी पढ़ाई पूरी की और एक अच्छी नौकरी हासिल की। अब उसके माता–पिता को दूर शहर जाकर मजदूरी नहीं करनी पड़ती थी। नीलम ने न केवल अपनी गरीबी दूर की बल्कि अपने जैसे दूसरे गरीब बच्चों के लिए एक छोटा सा स्कूल भी खोला ताकि किसी और बच्चे को भूखे पेट न सोना पड़े।

**चित्र–खुशी सैनी,** कक्षा–9, उमंग शिक्षण केन्द्र शेरपुर

**प्रिया गुर्जर**, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

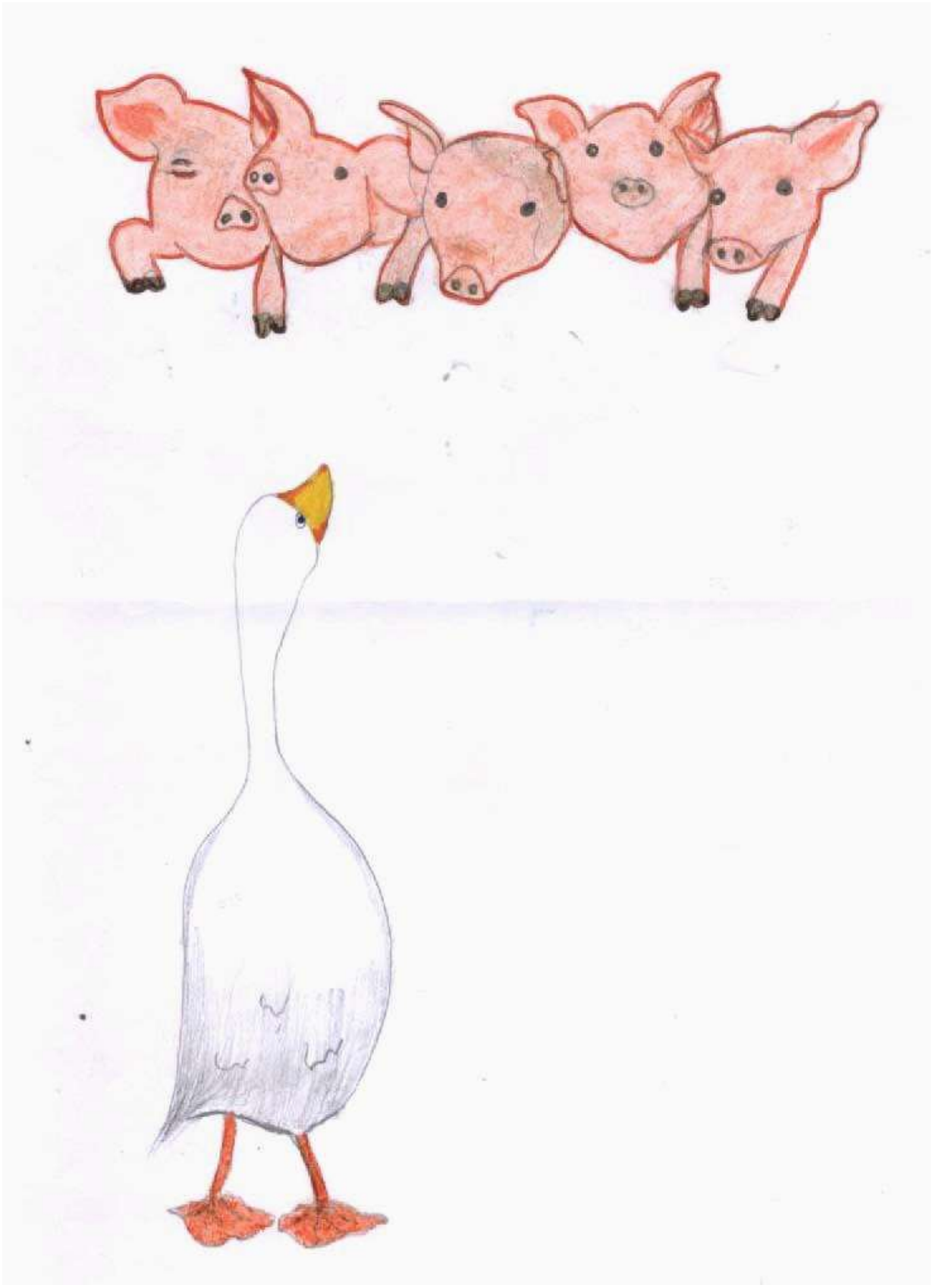

**चित्र–सविता मीना,** फैलो, उदय किरण सेंटर रांवल

# याद की धूप छाँव में

## बारिश का संकट

बारिश का मौसम था। बाहर बादलों की गड़गड़ाहट के साथ बहुत तेज बारिश हो रही थी। घर के अंदर पापा फोन पर किसी से बात कर रहे थे। उनके चेहरे पर चिंता थी। उन्होंने बताया पुलिया के ऊपर से पानी बह रहा है। बेचारी रियांशी का घर तो पूरा डूब गया है। रात के 2 बजे उनके परिवार को रस्सियों के सहारे बाहर निकाला गया। बेचारे दाने–दाने को मोहताज हो गए। घर का सारा सामान पानी में बह गया। यह सुनकर मेरा दिल पसीज गया। रियांशी मेरी सबसे अच्छी सहेली है। मैंने घबराकर पूछा, पापा रियांशी ठीक तो है ना? पापा ने सिर पर हाथ रखते हुए कहा, हाँ बेटा, सब सुरक्षित हैं, बस सामान नहीं बचा। तभी मेरे दिमाग में एक विचार आया। मैंने पापा से कहा कि पापा अगर उनके घर में कुछ भी सामान नहीं है तो उनसे बोल देना कि मेरे पास रसोई के जो सभी सामान हैं उनको ले जायेंगे। मैं उनसे दोबारा कभी नहीं मांगूंगी। तो मेरी बात सुनकर पापा के चेहरे पर हंसी आ गई लेकिन मुझे समझ नहीं आया कि वो हँसें क्यों?

**राधा गुर्जर,** कक्षा–2, उदय किरण फैलोशिप सेंटर भैरूपुरा।

**चित्र–नन्दिनी,** कक्षा–5, शेरपुर

## सपनों की उड़ान

एक छोटे से गांव में सपना नाम की एक लड़की रहती थी। सपना पढ़ने में बहुत होनहार थी और उसका एक ही सपना था। शहर जाकर पढ़ाई करना और कुछ बनकर दिखाना। लेकिन उसके घर की स्थिति थोड़ी अलग थी। सपना के पापा तो चाहते थे कि उनकी बेटी पढ़े लेकिन उसकी मम्मी इस बात के सख्त खिलाफ थी। जब भी सपना बाहर जाने की बात करती, मम्मी का डर झगड़े का रूप ले लेता। वह कहती, लड़कियों का बाहर जाना ठीक नहीं है। अगर कुछ गलत हो गया या तू कहीं भटक गई तो हम दुनिया को क्या मुँह दिखायेंगे। तू यहीं रहकर घर के काम सीख। मम्मी की बातें सुनकर सपना का दिल टूट जाता। उसे समझ नहीं आता था कि पढ़ने की इच्छा रखना कोई गुनाह है क्या? एक दोपहर जब घर में फिर से इसी बात पर बहस हुई तो सपना दुखी होकर गांव के बाहर एक पुराने बरगद के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गई। उसकी आँखों में आंसू थे और मन में निराशा। तभी वहाँ से स्कूल की एक अध्यापिका गुजर रही थी। उन्होंने देखा कि हमेशा मुस्कुराने वाली सपना आज बहुत उदास है। अध्यापिका ने पास आकर पूछा, क्या बात है बेटा, आज स्कूल नहीं आई और यहाँ अकेले क्यों बैठी हो? सपना ने रोते हुए अपनी सारी व्यथा कह सुनाई। उसने बताया कि कैसे उसकी मम्मी उसके बाहर जाने के डर से उसे पढ़ने नहीं दे रही है। अध्यापिका ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा, चलो आज मैं तुम्हारी मम्मी से बात करती हूँ। अध्यापिका सपना के घर पहुँची। उन्होंने सपना की मम्मी को बड़े प्यार से समझाया। देखिए, आज का समय बदल गया है। आज लड़कियाँ चाद पर जा रही हैं। डाक्टर और ऑफिसर बन रही है। अगर आप उसे आज रोकेंगी तो वह जीवन भर पीछे रह जाएगी। पढ़ाई उसे बिगाड़ेगी नहीं, बल्कि उसे समझदार और आत्मनिर्भर बनाएगी। डरकर पीछे हटने से अच्छा है कि हम अपनी बेटियों पर भरोसा करें। अध्यापिका की बातों और उनके आत्म विश्वास ने मम्मी के मन का डर कम कर दिया। उन्हें अहसास हुआ कि उनकी बेटी का भविष्य उनके डर से कहीं ज्यादा कीमती है। उन्होंने मुस्कुराते हुए सपना को गले लगा लिया और बाहर जाकर पढ़ने की इजाजत दे दी। पूरे गांव में सपना की खुशी का ठिकाना न था। वह अपनी आँखों में नए सपने लेकर शहर की ओर निकल पड़ी, क्योंकि अब उसके पास उसके परिवार का भरोसा था।

**लवकुश बैरवा,** कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

**चित्र–पायल बैरवा,** कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

# भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1. काका मैंने कोओ देखिया, कह भतीजा केसों देखियो, चोच नहीं पर चुगतो देखिया, पंख नहीं पर उड़तो देखियो?
2. माड़ चाली खेत चाली, मेंढको सो लटकार चाली?
3. सौ कुराड़ोस, सौ धर नहीं कटे समुद्र की धार?
4. माण चाली खेत चाली होड़ा सा बकेर चाली
5. छोटो सो आड़यो उसमें बेठियो दादाजी काड़ियो?
6. अरगई को घाघरो फरराई की लुगड़ी आओ रे भाई सगा चीर चीर देखो?

**आशिका बैरवा**, कक्षा–5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर हिम्मतपुरा।

**चित्र–भोला शंकर,** शिक्षक, उमंग शिक्षण केन्द्र रांवल

# चुटकले

1. पप्पू – पापा एक डीजे मंगवा दो।

   पप्पू के पापा – नहीं, तुम रात में सबको परेशान करोगे।

   पप्पू – नहीं पापा, रात में सब सो जायेंगे तब बजाऊँगा।

**अभिषेक गुर्जर**, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

2. शादी में रवि काफी देर से खाना खा रहा था। किसी ने पूछ लिया कितना खाओगे। वो बोला मैं भी खाते–खाते परेशान हो गया हूँ परन्तु कार्ड में लिखा है खाना खाने का समय 7 से 10 बजे तक है।

**विजय गुर्जर**, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

**चित्र–गोलू गुर्जर,** फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बोदल

# बात लै चीत लै

## चतुर किसान

किसान अपना खेत जोत रहा था। तभी अचानक कहीं से भालू आ गया। भालू किसान को मारने झपटा। किसान ने कहा, मुझे क्यों मारते हो? मैं एक किसान हूँ। तुम जो खाओगे वही जमीन से पैदा करके खिलाऊंगा। अब मैं फसल बोने वाला हूँ। फसल आने दो जो कहोगे वहीं खिलाऊंगा। तो किसान ने कुछ सोच कर भालू से बोला, कि तू बता तू फसल का कौनसा हिस्सा लेगा, ऊपर का या नीचे का? तो भालू ने कहा कि नीचे वाला हिस्सा लूगा। किसान ने गेहूँ की फसल बोयी और अंत में फसल के बंटवारे का समय आया तो किसान को मोटे अनाज प्राप्त हुए और भालू को चारे के अलावा कुछ नहीं। भालू समझ गया कि बात है? कुछ महिनों बाद फिर से खेत में बुआई का समय आया तो फिर से भालू से पूछा तो भालू ने इस बार ऊपर का हिस्सा मांगा तो इस बार किसान ने मूंगफली की खेती की। जब फसल के बंटवारे का समय आया तो किसान को अच्छी मूंगफली प्रापत हुई और भालू  को फिर से खाली हाथ रहना पड़ा। भालू सोचने लगा कि क्या करूं तो भालू ने सोचा कि अगली बार किसान से फसल का ऊपर व नीचे दोनों का हिस्सा मांगूगा तो देख किसान क्या करता है। कुछ महिनों बाद फिर से खेत में बुआई का समय आया तो किसान ने फिर से फसल का हिस्से के बारे में पूछा तो भालू ने वही कहा जो उसने पहले से सोच रखा था। भालू ने किसान से कहा कि मुझे इस बार फसल का ऊपर व नीचे, दोनों का हिस्सा चाहिए तो किसान ने कहा कि ठीक है। इस बार किसान ने मक्के की खेती की तो किसान ने भालू से कहा चलो बंटवारा करते हैं तो किसान ने फसल के ऊपर व नीचे का हिस्सा भालू को दे दिया और खुद ने बीच का हिससा रख लिया तो भालू समझ गया और फसल लेकर किसान से कहा कि भैया अगली बार खेती आप ही कर लेना और उसे आप ही रख लेना।

**वीर सिंह**, कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर भैरूपुरा।

## अमरूद और टमाटर की गपशप

**चित्र–भारती सैनी,** कक्षा–9, उमंग शिक्षण केन्द्र रांवल

ढोलक गांव के पास चारों और खेत ही खेत हैं जिसमें सर्दी के मौसम में गेहूँ की खेती की जाती है। वहीं पर एक खेत में अमरूदों का बगीचा लगा हुआ है और उसमें एक टमाटर का पेड़ है जिसमें लाल टमाटर आ रहे हैं। सर्दी के मौसम में सुबह की पहली किरण के साथ ही देखा गया कि चारों और कोहरे के कारण कुछ दिखाई नहीं देता। ओस की बूंदों के कारण गेहूँ और अमरूदों की पत्तियों पर सफेद बर्फ जमी है कुछ ही समय में धूप निकली और वातावरण भी सुआवना हो गया। पत्तियों पर ओस की बूंदे चमकने लगी, सर्दी कम हुई तो धूप में टमाटर और अमरूद बातें कर रहे हैं –

अमरूद – हाँ भई पटेल, आज तो निकल गई न हवा सर्दी में?

टमाटर – अरे मुझे तो सर्दी ही नहीं लगती, मैं तो मजे से चिपका हुआ था।

अमरूद – मैंने भी देखें तेरे मजे सर्दी से बीज बाहर आ रहे थे, नाक टपक रही जो अलग।

टमाटर – तुम्हें भी देखा मैंने डालियाँ भड़ा–भड़ बोल रही थी और तू बंदर की तरह लटक लटक कर रहा था फोकट की बात करता है, खुद का तो पता ही नहीं।

अमरूद – चल ठीक है यार, सर्दी तो हम दोनों को ही लग रही थी और सुनाओ क्या चल रहा है?

टमाटर – क्या चल रहा है। हवा निकली पड़ी है। सर्दी में और वो एक लगड़ा (खेत का मालिक) और आता है आंच उचकाता–उचकाता अब तो टमाटर पर गया जैसे समय से पहले ही खा जायेगा। भगवान करे लगड़े की एक टांग और टूट जाये फिर देखें मैं कैसे टुल्ली डांस करता हूँ।

अमरूद – हाँ यार ये तो है मेरे साथ ही यही है।

दोनों मायूस होकर एक साथ बात करतें यार हमारी तो समस्यायें ही खत्म नहीं होती। साला यह काली मुड का हमें तो खाता भी नमक मिर्ची लगा के कसम से सांसे अटक जाती हैं।

अमरूद – यार मेरे पास एक आइडिया है। अब जब भी लंगड़ा आएगा हम दोनों उस पर ही डाली गिरा देंगे।

टमाटर – आइडिया तो तेरा सही है पर मेरी तो डाली भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती, छोटी है ना।

अमरूद – यार तेरे से तो कुछ भी उम्मीद करना ही बेकार है। मुझे ही कुछ करना पड़ेगा। मैं ही लंगड़े की नाक में अपने बीज घुसा दूंगा फिर छिंकता फिरेगा।

दोनों हंसते हैं हॉ हॉ .....।

**जगदीश कोली,** शिक्षक, उमंग कार्यक्रम मखौली।

**चित्र–अभिषेक गुर्जर,** उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

**पहेलियों के जवाब**

1. कुल्हाड़ी
2. ताला चाबी
3. छाया
4. मेंगड़ी
5. सांप
6. मक्का

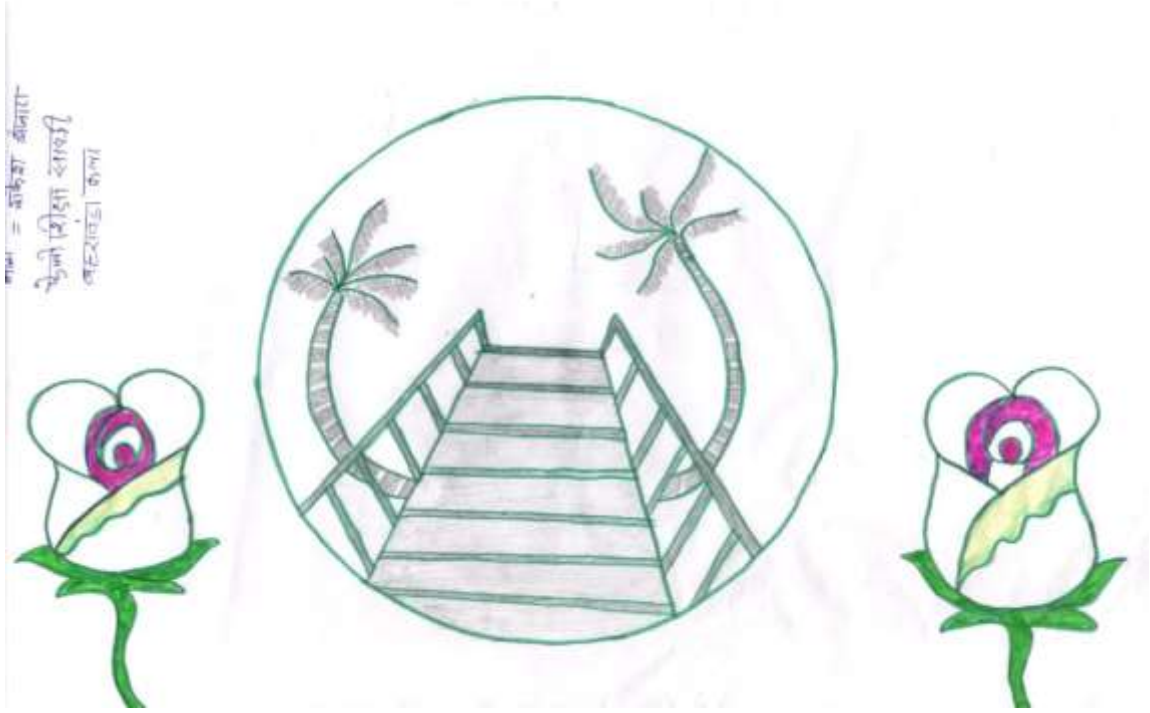

**चित्र–राकेश बंजारा,** फैलो, नवरंग शिक्षण केन्द्र बहरावण्डाकलां

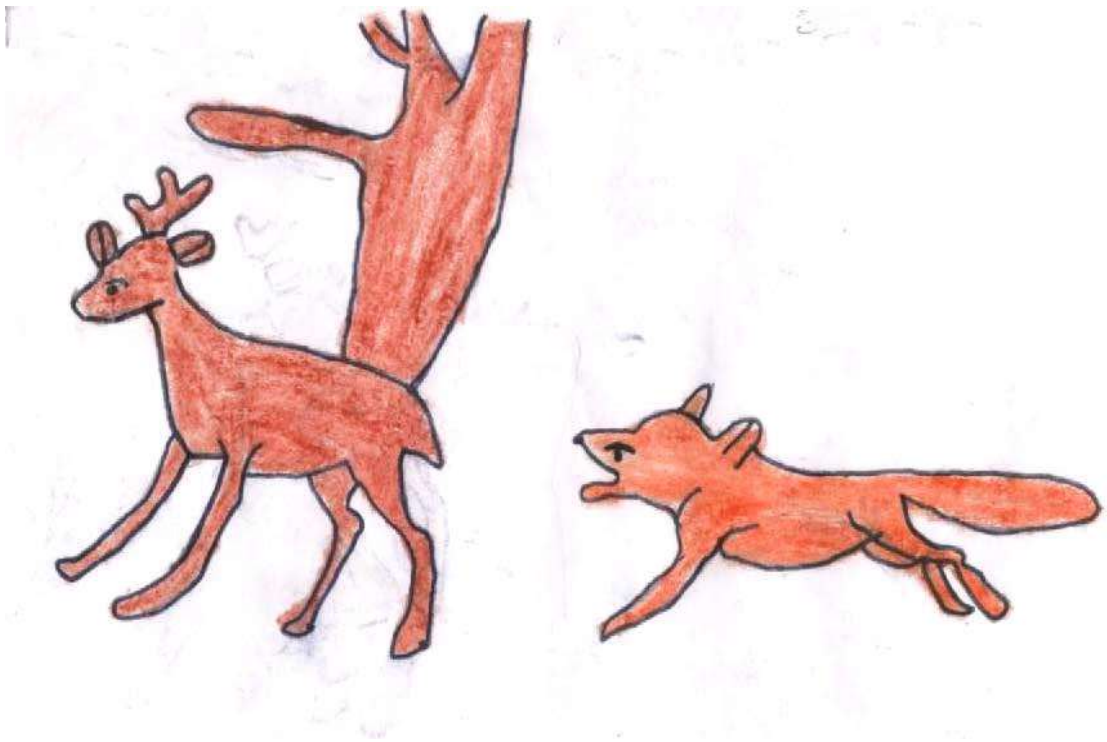

**चित्र–विजय बंजारा,** उम्र–10 वर्ष, नवरंग शिक्षण केन्द्र बहरावण्डाकलां